भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

वर्ष 29 अंक : 1 | 15.1.2006 रविवार (जनवरी - फरवरी) | प्रति अंक : 10.00

नए वर्ष की शुरुआत....मंगलकारी पर्वों के साथ !

अबकी बार तो नया वर्ष अर्थात् – 2006 का आरंभ ही बहुत ही मंगलकारी उत्सव से हुआ... ब्रह्मस्वरूप स्वामिश्री योगीजी महाराज एवं प.पू. काकाजी महाराज के आशीर्वाद रूप **तीर्थधाम पवई मंदिर**-मुंबई में **31 दिसंबर 2005** को सभी गुणातीत स्वरूपों की निश्रा एवं दिव्यतापूर्ण माहौल में अक्षरपुरुषोत्तम संस्था के आद्य संस्थापक ब्रह्मस्वरूप गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज और ब्रह्मस्वरूप गुरुहरि योगीजी महाराज की **स्वर्ण मूर्ति की प्रतिष्ठा** के साथ दिव्य प.पू. सोनाबा की जन्म शताब्दी खूब धूमधाम से मनाई गई और नए वर्ष में प्रवेश करते हुए यानि – **1 जनवरी 2006** को '**श्री अक्षरपुरुषोत्तम उपासना प्रवर्तन शताब्दी**' के साथ-साथ प.पू. दिनकरभाई एवं प.पू. महेन्द्रबापु का हीरक '**समन्वय महोत्सव**' मना कर गुणातीत समाज के मुक्तों ने अपनी भक्ति अदा करी।

सच ! हम सभी के लिए यह खूब गौरव का विषय है क्योंकि बृहद् गुणातीत समाज में पहली ही ऐसी स्वर्ण मूर्तियाँ हम सभी को दर्शन देने विराजमान हुई हैं। अपने वर्तन से प.पू. काकाजी महाराज को जीवंत रखने वाले ताड़देव के योगेश्वरों और मुंबई मंडल के हरिभक्तों को एवं जिन-जिन्होंने भी जाने-अनजाने इस अमूल्य सेवा में अपना योगदान दिया हो... उन सभी की भक्ति, सेवा, भावना को कोटि-कोटि वंदन !

अब.......`**2 फरवरी, वसंतपंचमी**'– ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज का प्रागट्य दिन तथा शिक्षापत्री जयंती का महामंगलकारी दिन आ रहा है। 'सोने पे सुहागा' रूप अक्षरपुरुषोत्तम युगल उपासना प्रवर्तन को भी इस वर्ष सौ वर्ष पूरे हो रहे हैं ! सो, हरिधाम-सोखड़ा में **४ - ५ फरवरी २००६** को इन पर्वों के साथ '***श्री अक्षरपुरुषोत्तम युगल उपासना प्रवर्तन शताब्दी महोत्सव***' का अंतिम सोपान मनाया जाएगा।

सौ साल पहले मार्टिन ल्युथर की भांति एक प्रोटेस्टन्ट के रूप में वड़ताल से बाहर निकले ब्रह्मस्वरूप गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने '**अक्षर-पुरुषोत्तम**' की – भक्त सहित भगवान की सिद्धांतिक **युगल उपासना** की अलख जगाई और श्री अक्षरपुरुषोत्तम के मंदिरों का निर्माण करके यह '**तत्त्वनिष्ठा**' मूर्त करी ! गुरुहरि योगीजी महाराज ने ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज, प्रगट ब्रह्मस्वरूप - प.पू. पप्पाजी महाराज, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी व प.पू. साहेब जैसे गुणातीत स्वरूपों की पहचान करा कर हमें भेंट दी; जो कि '**संघनिष्ठा**' के रूप में अद्भुत दिव्यता प्रगटा कर हमें अध्यात्म की - एकांतिकी स्थिति की ऊँचाईयों पर ले जाने अथक् परिश्रम कर रहे हैं। यूं, स्वामिनारायण संप्रदाय के इतिहास में हुई यह नवीन क्रांति स्वर्ण पृष्ठ रूप जुड़ गई और... इन सौ वर्षों

में 'अक्षरपुरुषोत्तम' का बिगुल भी दिगंत में बज चुका है। गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज और गुरुहरि योगीजी महाराज ने हमारे लिए खूब कसनी सह कर अनथक् परिश्रम किया है, सो उनके संकल्प को साकार करने प्रभु के बल से 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना से एक दिव्य जीवन जीने की ओर हम अग्रसर हों... शुद्ध उपासना दृढ़ करके जीवन धन्य बनाएं !

शिक्षापत्री जयंती – सर्व अवतारों के अवतारी पूर्ण पुरुषोत्तम सर्वोपरि भगवान स्वामिनारायण ने 'शिक्षापत्री' लिख कर स्वमुख से कहा – ***यह शिक्षापत्री मेरा स्वरूप है और छोटे-बड़े सभी शिक्षापत्री के मुताबिक आज्ञा में वर्ते।*** तभी तो शिक्षापत्री में श्रीजी महाराज ने मानो 'गागर में सागर' की तरह साधु, गृहस्थ, राजा, आचार्य, सधवा-विधवा सभी के लिए नियम लिख दिए। सच, इन नियमों को पालने से **जगत के व्यवहारिक दुःखों** से प्रवाहीमार्गी की तो **रक्षा** होगी ही, पर धर्म-ज्ञान- वैराग्य और भक्ति की अद्भुत सूझ देता यह छोटा-सा शास्त्र अध्यात्म के राही के लिए **मोक्षप्राप्ति** की अत्यंत सरल व प्रीसाईझ गाईड भी है।

✱ 3 फरवरी – ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज का साक्षात्कार दिन ! गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज ने स्थावर मंदिरों का निर्माण करके 'अक्षरपुरुषोत्तम' की शुद्ध युगल उपासना का प्रवर्तन किया, तो गुरुहरि योगीजी महाराज ने चलते-फिरते जंगम मंदिर तैयार करने का बीड़ा उठाया।

भगवान की सेवा करने वाले और भगवान के साथ रहने वाले हरिभक्त बहुत होते हैं। लेकिन भगवान की पसंद में और अनुवृत्ति में वर्तने वाले कोई विरल ही होते हैं। श्री रामचंद्रजी दस हज़ार साल तक पृथ्वी पर रहे, लेकिन भक्त श्रेणी में तो बंदरों का नाम ही लिखा गया। कृष्ण परमात्मा के साथ रहने के बावजूद भी छप्पन कोटि यादव 'अभागे' ही लिखे गए, जबकि गोपीयाँ 'वेद की श्रुतियाँ' बनी और कई गोपबाल 'भक्त' लिखे गए।

प्रत्यक्ष भगवान या ऐसे एकांतिक संत की पहचान के बिना 'अज्ञान' जाता ही नहीं और 'स्वामी की बात' में कहा है कि 'सत्पुरुष की अनुवृत्ति' – वही सच्ची 'भक्ति' है। ऐसी सच्ची भक्ति के स्वरूप पू. भगतजी महाराज और पू. जागास्वामी थे। गुणातीत की आँख के इशारे पर इन दोनों मुक्तों की देह मुड़ती थी। सहज सूचन में तो वे समग्र की कुर्बानी दे देते थे और अंतर की प्रसन्नता पाकर पिछड़े समाज के होते हुए भी आध्यात्मिक वारिसदार बने।

गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज भी कहते कि समाज तो बहुत बढ़ा, लेकिन जिसे देख कर मेरी छाती को ठंडक हो ऐसे चार मुक्त निकले और उसमें प.पू. योगीजी महाराज अद्वितीय स्थान पर थे ही।

ब्रह्मस्वरूप स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज के परिचय में तो प.पू. काकाजी महाराज बहुत थोड़े समय ही रहे, लेकिन शास्त्रीजी महाराज के स्वधाम पधारने के बाद गुरुहरि योगीजी महाराज के साथ का उनका मानो कोई पूर्व का संबंध हो, यूं प.पू. बापा के साथ रसबस हो गए।

1952 में प.पू. स्वामीबापा ने पू. काकाजी को अपना खूब तेजी से तरक्की करता व्यापार छुड़वा कर श्री नंदा साहेब का चुनाव लड़ने भेजा। अप्रतीम श्रद्धा और अपूर्व विश्वास से केवल पू. बापा को राजी करने के लिए तन, मन और धन से भयंकर कसनी सह कर पू. काकाजी ने चुनाव लड़ा। नंदाजी विजयी बने और पू. काकाजी ने प.पू. बापा के अंतर की प्रसन्नता प्राप्त करी। फलस्वरूप **1952 की 3 फरवरी** को 72 घंटे की अक्षरधाम की समाधि करवा कर प.पू. बापा ने उन्हें असली नारायण का - महाराज का साक्षात् दर्शन कराया और अलौकिक सुख का अनुभव कराया। '**स्वामी और श्रीजी**' के प्रगट स्वरूप की भव्य पहचान करवाई और अज्ञान की निवृत्ति कर दी ! इस अनुपम दर्शन के बाद पू. काकाजी ने प्रगट प्रभु के स्वरूप की सच्ची पहचान करवाने की सर्वोपरि सेवा का मार्ग पकड़ लिया और... आध्यात्मिक उत्थान में प्रकृतिपुरुष से परे के दिव्यजीवन में अखंड रहने की सच्ची विजययात्रा की शुरुआत हुई।

प.पू. शास्त्रीजी महाराज ने तो कहा था – 'मैं वह जोगी और जोगी वह मैं'। ऐसी स्पष्टता करने के बावजूद समग्र सत्संग समाज में अज्ञान की धुंध तो छाई रही ही थी। फिर भी, पू. काकाजी ने 'स्वरूप' की सच्ची पहचान की बात सत्संग समाज में पूरे जोर-शोर से फैलाई।

'शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज में रोममात्र भी फर्क नहीं है। हमारे समक्ष 'जोगी' जो विराजमान हैं, वही

महाराज का भव्य स्वरूप है। मध्य 32 के मुताबिक इनका सेवन कर लो और इन्हें तनिक भी मोहताज़ करना नहीं, वर्ना सभी साधन और सेवामात्र अभद्र हो जाएगी....'

–यूं स्वरूपनिष्ठा और महिमा की बहुत बातें करके अक्षरपुरुषोत्तम संस्था के तत्कालीन सारे समाज को जाग्रत कर दिया और प्रत्यक्षस्वरूप को राजी करने का साधना मार्ग खूब ही सरल बना दिया।

प्रत्यक्षस्वरूप की महिमा गाने में और प.पू. बापा की रुचि के मुताबिक संत बनाने की योजना में पू. काकाजी जुड़ गए, तो उन्हें सहना खूब पड़ा; लेकिन प्रत्यक्षस्वरूप की मर्जी के मुताबिक सेवा करी तो प.पू. बापा ने उन्हें अपना **'आध्यात्मिक वारिस'** भी बनाया ही।

3 फरवरी का दिन आध्यात्मिक इतिहास के पन्नों पर स्वर्णाक्षरों से लिखा ही जाएगा; क्योंकि वहीं - अक्षरधाम में **प.पू. काकाजी ने संकल्प किया था** कि –

ऐसा सुख भाई (प.पू. पप्पाजी), बा, बहन वगैरह सभी साथी -स्वजनों को भी मिले।

और... महाराज ने आशीर्वाद भी दिए। यूं, ३ फरवरी का दिन यानि साक्षात्कार का दिन-विजयप्रस्थान का दिन-संतों, बहनों, युवकों, गृहस्थों सभी के लिए एकांतिक धर्म की सिद्धि हेतु शुभसंकल्प का दिन है। बापा का संकल्प था कि एक दिव्य समाज की स्थापना हो और...यूं कहें कि इस दिव्य संकल्प में प.पू. काकाजी महाराज जैसे शूरवीर स्वरूपनिष्ठ पात्र की पसंदगी हुई।

सभी शास्त्रों का सार यही है कि प्रत्यक्ष स्वरूप की रुचि में, पसंद में, अनुवृत्ति में मन-कर्म-वचन से वर्तना यही सच्ची सेवा या भक्ति है। इसके अलावा करी सेवा-भक्ति देहाभिमान को बढ़ावा देती है। सो, साधक एकांतिक सत्पुरुष को ही खुद का जीवन बना दे।

प.पू. काकाजी महाराज को अक्षरधाम में साक्षात् श्रीजी महाराज के रूप में योगीबापा के जो दर्शन हुए, उस दिन से प.पू. काकाजी महाराज ने जीवन की प्रत्येक क्षण योगी व योगी के संबंध वालों के लिए ही परम भक्ति मान कर सतत् बिताई है।

बापा का संबंध देख कर ही वे वर्ते... स्वरूपनिष्ठा के बल से वे जिए... गुणातीत समाज के हर एक के लिए अनुपम आदर्श बन कर जीए। सत्संग में भी अनेक प्रकार की कसौटी से गुजरे, कड़े अवरोध आए, उपेक्षा हुई - पर प्रत्यक्ष स्वरूप की अडिग निष्ठा के बल से पार करते गए... संबंध वाले सभी में 'योगी' का दर्शन ही करते रहे...फलस्वरूप उनकी ब्रह्ममस्ती कैसे भी संजोगों में कभी गई नहीं... उनकी ज्ञानसमाधि कभी टूटी नहीं।

इससे भी अधिक – स्थूल रूप से गुरु से दूर होते हुए भी प.पू. काकाजी महाराज सेवकभाव व दासत्वभाव से ही रहे। **तभी तो गुणातीत समाज की नींव में उनके समाए होने के बावजूद इस बात का हमें एहसास नहीं रहता कि आज हम इन आलीशान भवनों में जो ब्रह्मानंद कर रहे हैं, वह उन्हीं की बदौलत है।** इनकी साधुता का, पारमेश्वरी शक्ति का, अंतर्यामी शक्ति और सर्वज्ञता का दर्शन हम सभी को कई बार हुआ, फिर भी अपनी सीमित बुद्धि से हम उन्हें नापते रहे... वाकई, चिदाकाश के क्षितिज को देखने-समझने के लिए अंतर के दिव्य चक्षु ही चाहिए !!

सो आइए, **वर्षों पहले – १९७२** में हमारे प्रगट गुणातीत स्वरूपों द्वारा कथित प.पू. काकाजी महाराज की अगाध महिमा को निहारें –

❖ *'' बचपन से हम दोनों भाईयों में अटूट एकता थी-अजोड़ प्रेम था; लेकिन दादुभाई को अनुभूति होने के बाद मैं जब स्वदेश आया तो दादुभाई का सारा प्रेम कांतिभाई की ओर सहज ढला हुआ देखा। उनकी आपसी रसबसता से मुझे एक आश्चर्य भी हुआ। फिर – उसकी वजह ढूंढी; तो उसमें* ***'बापा'*** *दिखाई दिए। बापा के वचन से बुना हुआ इनका जीवन देख कर मैंने भी एक संकल्प किया कि 'भाई ' के साथ के इस प्रेमप्रवाह में डूबना ही है और उसके लिए कांतिभाई के साथ की ईर्ष्या छोड़ कर उनके साथ ही रसबस हो गया ! तो आज मैं भी इस एक दिव्य बिरादरी का अंग बन गया हूँ...* ***दादुभाई की इस अनुभूति के फलरूप आज एकांतिकों का एक समाज तैयार हो गया। बापा के भव्य स्वरूप की सभी को पहचान हो गई और गृहस्थों के लिए एकांतिक मार्ग सरल बना। इसका पूरा यश दादुभाई के हिस्से जाता है।***

...संप्रदाय तो बहुत चले हैं, लेकिन 'संकल्प की बीमारी' किसी ने टाली नहीं। ***'गुणातीत'*** *एक ही* ***'डीस्टील्ड वॉटर'***

*जैसा पारदर्शक स्वरूप था। उन्होंने केवल महाराज को ही रखे और महाराजमय ही वे वर्ते। **गुणातीतपुरुषों के जीवन में एक महाराज के सिवा किसी का भी स्थान होता ही नहीं।** 'जगत' का और 'स्व' के अस्तित्व का भी संभव नहीं हो सकता। ऐसे निरवप्रदेश का दर्शन प.पू. बापा ने पू. काकाजी को कराया... काकाजी ने बिगुल बजाया कि बापा सामान्य साधु नहीं, लेकिन महाराज का स्वरूप हैं। भयंकर विरोधों में भी स्वामी की प्रेरणा के मुताबिक उन्होंने उनका कार्य जारी ही रखा और उसके फलस्वरूप आज एक **'आध्यात्मिक समाज'** रचा गया है। ''*

– प.पू. पप्पाजी

❖ *वचनामृत अंत्य. २६ में सच्चे **'ब्रह्मस्वरूप संत'** के लक्षण बताए हैं कि ऐसा संत धर्म, ज्ञान, वैराग्य, भक्ति से युक्त होने पर भी सत्संग में कोई कुछ समझता ना हो उसके पास भी स्वयं को अतिन्यून मानता है और उसकी महाराज के भाव से सेवा करता है।*

*ऐसा एक अनमोल गुण प.पू. काका के जीवन में स्पष्ट दिखाई देता है। सारे गुणातीत समाज में रसबस होकर समग्र का याहोम करके त्यागी या गृही या युवकों में एकांतिकी स्थिति के लिए **उन्होंने जो परिवर्तन प्रगटाया है उसके लिए समग्र समाज पू. काकाजी का हमेशा का ऋणी रहेगा।***

– प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी

❖ *कहा जाता था – अपमानों में भी सदा ही अलमस्त रहे और ठंडक ही जिसके चेहरे पर दिखाई पड़े , वो 'भगतजी'। ऐसे ही अपमानों की परंपरा में मैंने प.पू. काकाजी को देखे हैं, पर प.पू. काकाजी की धीरज, अडिगता, दिव्यभाव और निर्दोषबुद्धि में रंचमात्र फर्क पड़ा नहीं देखा, बल्कि अपमान करने वालों पर दया ही बरसाते देखा है–अकारण उनका भला ही करते देखा है। गुणातीत पुरुष के ही ये लक्षण हो सकते हैं।*

– प.पू. साहेब

❖ *दरिया जैसी प.पू. काकाजी की विशालता, हिमालय जैसी अडिगता और दया से भरपूर ऐसा सबल प्रेम **समग्र गुणातीत समाज में अतुल्य ही रहेगा।***

– प.पू. हरिभाई साहेब

✻ 15 फरवरी – प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी का प्रागट्य दिन...

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी यानि –

गुणातीत भावना की खुश्बू फैलाने गुरुहरि योगीजी महाराज द्वारा 'साधु' के मार्ग के लिए चुने हुए – अखूट विश्वास, असीम श्रद्धा, अगाध माहात्मय, अपूर्व स्वरूपनिष्ठा का मूर्तिमान स्वरूप ! गुरुहरि योगीजी महाराज ने १९६१ में पढ़े लिखे ५१ युवकों को साधु की दीक्षा दी, तब कहा था कि – ***'खाक हो जाओ तब भी भगवा कपड़े नहीं उतारना...'*** और... गुरु की इस आज्ञा को सारधार पालते हुए साधुता के गुण सुशोभित करके प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी निरंतर भक्ति अदा कर रहे हैं। संबंध में आए चैतन्यों को अपने निर्व्याज प्रेम में झबो कर, उन्हें निर्मल बना कर प्रभु के मार्ग की ओर प्रेरित करने की ' निष्काम सेवा ' में अविरत लगे हैं। 'तू ही - तू ही' रटते प्रभु की मूर्ति में अखंड विहार करने वाले प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी के चरणों में प्रार्थना कि आपके जैसी गुरुभक्ति, दासत्वभक्ति, साधुता हमारे रोम-रोम में भी प्रगटे !

✻ 7 मार्च – हमारे प्रभु प.पू. काकाजी को हमारे बीच से स्थूल रूप से विदाई लिए अबकी बीस साल पूरे हो जाएंगे। यूं तो प.पू. काकाजी हमारे चैतन्य की अब भी वैसी ही परवरिश कर रहे हैं – यह एहसास हमें अनेक बार हुआ है। गुणातीत समाज के मुक्तों के लिए अंतर्दृष्टि करके प्रार्थना करने का यह दिन है। प.पू. काकाजी का जीवन पल-पल हमें यही एक संदेश देता है कि हम आपस में कुटुंबभाव से रहें – भव्य प्राप्ति के आनंद में मस्त रहें और संबंध वालों के प्रति जबरन् भी 'दिव्यभाव' पकड़े रखें।

प.पू. काकाजी के अंतर की यही एक चाहना थी कि हम सब हमारी 'अस्मिता' छोड़ कर जल्द से जल्द अखंड सहजानंदी कॉन्सियसनेस में रहते हो जाएं। जितना हम इस राह की ओर चलेंगे, उतनी उन्हें हमारी ओर से 'ठंडक' होगी। तो, 'स्व' के भावों से ऊपर उठ कर एकता और सुहृद्भाव का माहौल बनाने हम उनके 'दिव्य कार्य' के वाहक बने – ऐसी प्रार्थना !

आइए, इस हेतु १९७१ में प.पू. काकाजी महाराज द्वारा दिल्ली में करी कथावार्ता के रहस्य को पकड़ कर हम उस राह पर अग्रसर हों।

किसी भी संप्रदाय, संस्था या धर्म के आदर्शों या सिद्धांत चाहे कितने ही उच्च होंगे, लेकिन उसके प्रमुख कार्यकर्ताओं में यदि रागद्वेष होगा और प्रेमभाव से विशाल दृष्टि – ब्रॉड आउटलुक रख कर प्रवृत्ति नहीं की जाएगी, तो उसकी गूँज देश-विदेश में अलग ही पड़ेगी और वह प्रणालिका एक बदबूदार डबरे की भाँति निष्प्राण – डेड युनीट बन जाएगी। तीव्र गति से छलांग भरता आज का विज्ञानमय ज़माना तो उसे लांघ कर सद्भाव और संगठनभाव की भावना को लेकर अत्यंत तेज रफ्तार से आगे दौड़ता ही जाएगा।

सो, ऐसी जड़ता से दूर रह कर सद्भावना से अत्यंत विशालता डेवेलप करके सभी के अपने-अपने मूलभूत नियमों के आधार पर स्वरूपलक्षी ज्ञान और प्रेम का प्रवर्तन करेंगे, तो भगवान की पारमेश्वरी शक्ति भी वहाँ काम करती हो जाएगी। ऐसे अनुभवी पुरुषों के पास मन की समस्या का हल मिलेगा, सच्ची शांति मिलेगी, विकारी तत्त्व दूर होते जाएंगे और सत्संग हरा एवं वृद्धि को पाता दिखाई देगा।

वचनामृत सारंगपुर ७ और अंत्य. ११ के मुताबिक ऐसा अखंड नैमिषारण्य और निर्दोषबुद्धि का माहौल जहाँ नज़र आए, वहाँ पर जो व्यक्ति जप, तप, यज्ञ, योग, व्रत, दानादिक करेगा, उसका जीव वृद्धि को पाएगा-बल को पाएगा; चाहे वह भगवान के पास हो या दूर हो। यह अविचल नियम हमेशा के लिए अटल ही रहने वाला है। तो, परम सत्य की ही ऐसी उपासना करके ऐसे 'स्वरूप' को तत्त्व से पहचान कर जगत में और जीवन में रहते हुए 'अक्षरधाम' का सुख लेने श्रेयार्थी साधकों को ऐसे 'भगवदी भक्त' का प्रसंग करना चाहिए।

*आध्यात्मिकता में यूं किसी भी संप्रदाय या संस्था या बाड़े का महत्त्व नहीं है। लिहाजा **'गुणातीतज्ञान'** सभी धर्मों, संप्रदायों और संस्थाओं से परे है। फिर भी सभी को अपने में समा कर सभी श्रेयार्थीओं के लिए खुल्ला भी है। सो, जाग्रत व सावधान रह कर सभी उसका लाभ लें ऐसी विनती है।*

*दूसरे सभी आत्मसाक्षात्कार वगैरह **योग** हैं, जबकि यह **पूर्णयोग की पूर्णाहुति** है। अनुभव द्वारा इस तथ्य को मान कर दृढ़ता से उसके मुताबिक वर्तने वाले को यह रहस्यदर्शन आसान होगा। इसके लिए किसी पर कोई दबाव, जबरदस्ती या आग्रह नहीं है। केवल साक्षीभाव से आध्यात्मिक अनुभवों में से निचोड़ा यह सूत्रात्मक रहस्यज्ञान है।*

*तो, प्रत्यक्षस्वरूप का एकचित्त से स्मरण करते रह कर किसी के भी दोष - स्वभाव - प्रकृति को देखे बिना खुद का श्रेय कर लेने की तान रख कर जो भी वर्तेगा उसका जीव खूब बल को प्राप्त करके वह जीतेजी ही परम सुखी हो जाएगा। गुरुदेव ने केवल कृपा से **'अक्षरधाम' मौज में** दिया है। तो कैसा भी पापी – दोषी जीव होगा, लेकिन उसे प्रगट की यह निष्ठा दृढ़ हुई होगी तो उसका आख़िरी जन्म होकर वह परम सुखी होगा। 'जय घोषणा' की यह बात 'मुक्तों' को भी समझ लेने जैसी है।*

— ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज

✱ 14 मार्च – होली का दिन-भक्त की भक्ति की जीत का दिन ! भक्त प्रहलाद् को 'होलिका' जला न पाई - इस तथ्य का सचोट उदाहरण प्रभु ने धरती पर सदा के लिए रख दिया और... भक्तों के इस विश्वास को 'होली' के पर्व ने दृढ़ता प्रदान की। इसी दिन हुए **अनादि महामुक्त भगतजी महाराज के प्रागट्य** से एक अद्भुत संकेत मिलता है कि उनकी भाँति ऐसे प्रभुस्वरूप संत के पास हम यदि संपूर्ण समर्पण कर देंगे, तो वे हमेशा हर प्रकार से हमारी रक्षा करेंगे ही।

अनादि महामुक्त भगतजी महाराज 12 वर्ष तक अनादि महामुक्त गोपाळानंदस्वामिजी के शिष्य बन कर रहे। फिर सद्. गोपाळानंदस्वामी की आज्ञा से मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी की शरण में गए और... स्वामिश्री को श्रीजी महाराज का प्रत्यक्ष स्वरूप मान कर मन, कर्म, वचन से अद्भुत सेवा करी। मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी के आदेशों और उपदेशों को अपना जीवन बनाया। हर एक मुक्त में स्वामी को ही देखा और गुणातीत स्वरूप बन गए....

भगतजी महाराज के प्रागट्य दिन पर उन्हें कोटि-कोटि वंदन करते हुए प्रार्थना कि हे भगतजी महाराज ! आपके जीवन

की ओर सतत् नज़र रख कर अध्यात्म के पथ पर हम आगे बढ़े और गुणातीत स्वरूपों की सिद्धांतिक प्रसन्नता पा लें।

✱ 15 मार्च – धुलेन्डी का पर्व यूं तो आपसी मनमुटाव को भुला कर दोस्ती से मिलन का अवसर। लेकिन, गुणातीत समाज के हम भक्तों के लिए तो हर हालात में 'दिव्यता' के मार्ग की ओर अपने साथी - मित्रों से दोस्ती बरकरार रखते हुए एकता से कदम बढ़ाते **प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. साहेब का प्रागट्य दिन !**

' जशुभाई ! हमारा जन्म नौकरी या व्यापार-धंधे करने नहीं हुआ। हमारा जन्म तो अनेक चैतन्यों को भगवान भजवाने के लिए हुआ है। '

' हे जशुभाई साहेब ! अब तुम्हारा बल लेकर दूसरे युवक निष्कामी हो जाएंगे। '

गुरुहरि योगीजी महाराज ने अंतर की प्रसन्नता बताते हुए ऊपर लिखे ये आशीर्वाद ही प.पू. साहेब की महिमा का हमें सम्यक् परिचय दे जाते हैं।

गुरुहरि योगीजी महाराज कैसी पारदर्शक विभूति होगी – जिन्होंने प.पू. साहेब को युवकों के आध्यात्मिक नेता के रूप में चुना और शिष्य ने सिर्फ अपने वर्तन से वो भरोसा साकार ही नहीं किया, बल्कि गुरु की शान को चार चाँद लगा दिए।

अनेक कल्याणकारी गुणों के धारक प.पू. साहेब के दर्शनमात्र से संबंध में आने वालों को भीतर में 'ठंडक' मिलती है – जीवन की सच्ची दिशा मिलती है – व्यवहारिक व आध्यात्मिक सूझ प्राप्त होती है।आज उनके संकल्प से - प्रार्थना से - अनुग्रह से - आशीर्वाद से अनेक चैतन्य प्रभु की राह पर प्रभु प्राप्ति के लिए निरंतर अग्रसर हैं... ऐसे प्रभुधारक दिव्य विभूति के प्रागट्य दिन पर प्रार्थना कि –

हे साहेब ! आपके द्वारा दिया अनमोल ब्रह्मसूत्र **' थिंक पॉझीटिव, रेस्ट विल फॉलो... '** हम हमारे जीवन में साकार करें ऐसा आप हम पर अनुग्रह करना !

✡✡✡

श्रवण, मनन, निदिध्यासन

*[**' बड़े घर दीवाली ' शिविर** के सार को जानने आप सब 'भगवत् कृपा' की राह देख रहे होंगे। इस शिविर के लिए प.पू. गुरुजी ने रोज के '**मननीय ब्रह्मसूत्र**' पहले से लिखवा रखे थे... इनमें से रोज एक सूत्र पर्दे की पृष्ठभूमि पर बड़े अक्षरों में लिखा होता... **प.भ. मल्कानी अंकल** व सभी हरिभक्तों को वो सूत्र बहुत अधिक पसंद आए। दूर-सुदूर बैठे सभी हरिभक्त शिविर की निचोड़ रूप इन अमूल्य बातों से लाभान्वित हो सकें, इस भावना से 'श्रवण, मनन, निदिध्यासन' शीर्षक के अंतर्गत आप तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं....]*

' बड़े घर दीवाली ' शिविर के नित्य मननीय ब्रह्मसूत्र –

- *करोड़ों काम ठुकरा कर भी गुणातीत स्वरूप संत का समागम कर लेना।*
- *गुणातीत स्वरूप संत का जोग हुआ इससे बढ़ कर कुछ नहीं और ऐसे संत के प्रति मनुष्यभाव रहता है, वही सबसे घटिया बात है।*
- *भगवान के भक्त में जिसे ' आत्मबुद्धि ' – कुटुंबभाव हो – उसे ही ' सत्संग ' हुआ कहा जाए।*
- *गुणातीत स्वरूप संत की बात को मानें – यही ' पात्रता ' कही जाए।*
- *गुणातीत स्वरूप संत के प्रति सद्भावना रहे – यही ' निर्वासनिकभाव की वजह ' है।*
- *ब्रह्मभाव से वर्तने की अपेक्षा आपस में सुहृद्भाव से वर्तना अधिक है।*
- *गुणातीत स्वरूप संत जो मिले हैं, वे यथार्थरूप से पहचाने जाएं तो और कुछ खोजना पड़े नहीं।*
- *गुणातीत स्वरूप संत द्वारा भगवान को मानवस्वरूप में प्रगट - हाज़िर मानना, वो कलेजा टूटने जैसी बात है।*

* गुणातीत समाज के मुक्तों की जीवनशैली कैसी होनी चाहिए ? कैसी आत्मबुद्धि - अपनापन - कुटुंबभाव होना चाहिए ?

  हम खाना खाने बैठे ही हों, इतने में पता चले कि मेहमान आएं हैं और हम वो खाना किसी तरह छोड़ कर भक्तों के लिए रख दें... वे हम गुणातीत के- प.पू. काकाजी के सच्चे कहे जाएं।

* प.पू. काकाजी ने मुझे कहा था कि निष्ठा वाले, आत्मबुद्धि व प्रीति वाले हरिभक्तों के लिए कभी भी मन छोटा नहीं रखना। मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी भक्तों को जरुरत पड़ने पर मंदिर के कोठार में से ज्वार-बाजरा देते व कपड़े देते... कठिनाई आने पर रुपये देकर भी मदद करते। इस प्रकार स्वामिश्री भक्तों की अखंड संभाल रखते।

  यह अपना ट्रेडिशन होना चाहिए। 'कुटुंबभाव' का जिससे विकास होता हो वो सब कुछ करो।

  परम पूज्य काकाजी कहते कि – **व्यावहारिक बुद्धि से चलने से सत्संग का विकास नहीं होगा।**

  भक्तों की सेवा या ख़ातिर फॉर्मली-शिष्टाचार से नहीं, बल्कि आत्मबुद्धि से-महिमा से करने का हमारा प्यॉर इन्टेन्शन होगा, तो वो हमारी सेवा महाराज को जरुर पहुँचेगी।

* श्रीजी महाराज की योजना थी कि एक दिव्य समाज की स्थापना हो... जो एक इन्टिमेट परिवार – होली फॅमिली की तरह हो। महाराज को संप्रदाय की एस्टाब्लिश्मेन्ट नहीं करनी थी। इनका यह मिशन हम कभी भूलें नहीं।

* श्रीजी महाराज ने एक 'कुटुंबभावना' वाले सत्संग के लिए ही अनथक् परिश्रम किया। अगर श्रीजी महाराज चाहते तो गद्दी पर बैठने के पाँच-छः साल के अंदर ही मंदिर बनवा कर वहाँ रहते। पर, लगातार तीस साल तक दादाखाचर के दरबार में ही वे रहे। ऐसे परिवारों का निर्माण करके एक समाज का सर्जन किया।

  इसी बात को नींव बना कर गियर अप करने परम पूज्य काकाजी, परम पूज्य पप्पाजी, पूज्य कांतिकाका, पूज्य बा ने पॉयलट स्कीम पर जीने की शुरुआत करी और...'**गुणातीत समाज**' का सर्जन किया। **अब हम उसके टुकड़े ना करें !**

* अपने-अपने ग्रुप में, अपने-अपने सेन्टर्स में इन्टिमसी रख रखने वाली बात लंबी चलेगी नहीं। '**आत्मीयता' शब्द ही 'आत्मा' से कन्सर्न्ड है और आत्मा को तो कोई बाऊन्ड्री नहीं होती... वो तो सर्वव्यापक है।**

  दिल्ली वाले भी सिर्फ दिल्ली के हरिभक्तों के साथ ही आत्मीयता रखें, वो आत्मीयता नहीं कही जाएगी। मैं कई बार उदाहरण देता हूँ कि एक गली के कुत्ते इकट्ठे होकर दूसरी गली के कुत्तों को भौंक कर भगा दें, उसे गली के कुत्तों की आत्मीयता कही जाएगी क्या ? वो तो पशुता कही जाए ! इसी तरह दिल्ली, हरिधाम, मुंबई, विद्यानगर, ब्रह्मज्योति सब अलग नहीं; बल्कि एक ही हैं। एक बड़ा ह्यूज फेमिली है। तो, एक-दूसरों से क्षोभ भी क्यों हो ?

  'सब अपने ही हैं'–**यह सिर्फ सभाओं में बोलने में नहीं, बल्कि वर्तन में होना चाहिए।**

* 'बड़े घर दीवाली' शिविर में ***'भक्तचरितम्'*** में से श्रीजी महाराज के समय के ऐसे भक्तों का जीवन पढ़ेंगे, जिन्होंने ऐसा जीवन जीया हुआ है।

* सत्संग करने में नात, जात, वासना, स्वभाव परेशान करते हैं या लोक, भोग, देहाभिमान, पक्ष हमें सत्संग करने में आड़े आते हैं। इन भक्तों ने ये सब ठुकरा कर सत्संग रखा है।

* सत्संग में सुनी या पढ़ी हुई बातों को लेकर जितना जीएंगे–जितना उस रास्ते पर चलेंगे इतना ही '**सत्संग का स्वाद**' आएगा।

* महाराज के समय के ये सारे प्रसंग काल्पनिक कहानियाँ नहीं हैं, बल्कि बनी हुई घटनाएं हैं। इन प्रसंगों को अपने पर लेकर हम विचार करें कि **महाराज ने हमारे साथ यदि ऐसा करा हो तो–मुझे ऐसी आज्ञा करी हो तो मैं क्या करूँगा ?**

  आज्ञा पालने में भी तो हम कितनी चालाकियाँ कर जाते हैं। एक जगह तो ऐसी रखें जहाँ हम खुल्ले रहें– जहाँ कोई पर्दा ना हो। प्रभु को अंतर्यामी मान कर प्रभु के साथ तो हम खुल्ली बात कर लें। तब ही हम तरक्की कर पाएंगे। **हम जगत में दूसरों के साथ जो कपट रखते हैं, वो संत के साथ या भक्तों के साथ तो ना करें।**

निमंत्रण

3 फरवरी 2006, शुक्रवार प्रातः 8 से 11 ***अशोकविहार 'ताड़देव' स्वामिनारायण मंदिर का पाटोत्सव*** *और* ***ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज का साक्षात्कार दिन मनायेंगे......*** *इस मंगलकारी अवसर पर सपरिवार इष्ट मित्रमण्डली सहित उपस्थित रहने का आपको हार्दिक निमंत्रण है।*

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि. 23.1.'06,	सोमवार	–	ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज का स्वधामगमन दिन
(2)	दि. 26.1.'06,	गुरुवार	–	एकादशी, व्रत – **प्रजासत्ताक दिन** गुरुवर्य प.पू. योगीजी महाराज की स्वधामगमन तिथि
(3)	दि. 2.2.'06,	गुरुवार	–	वसंतपंचमी, शिक्षापत्री जयंती, ब्रह्मस्वरूप स्वामिश्री प.पू. शास्त्रीजी महाराज की जयंती
(4)	**दि. 3.2.'06,**	**शुक्रवार**	**–**	**ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज का साक्षात्कार दिन**
(5)	**दि. 4.2.'06,** **दि. 5.2.'06,**	**शनिवार** **रविवार**	}	***श्री अक्षरपुरुषोत्तम युगल उपासना प्रवर्तन शताब्दी महोत्सव, हरिधाम-सोखड़ा में***
(6)	दि. 8.2.'06,	बुधवार	–	एकादशी, व्रत
(7)	दि. 15.2.'06,	बुधवार	–	प्र.ब्र.स्व. प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी की जन्मजयंती
(8)	दि. 24.2.'06,	शुक्रवार	–	एकादशी, व्रत
(9)	दि. 26.2.'06,	रविवार	–	महाशिवरात्रि, व्रत
(10)	दि. 28.2.'06,	मंगलवार	–	प.पू. गुरुजी की जन्मजयंती तिथि
(11)	दि. 7.3.'06,	मंगलवार	–	प.पू. काकाजी महाराज का स्वधामगमन दिन
(12)	दि. 10.3.'06,	शुक्रवार	–	एकादशी, व्रत
(13)	दि. 13.3.'06,	सोमवार	–	प.पू. गुरुजी की जन्मजयंती ***(26 मार्च, रविवार को ताड़देव - दिल्ली में मनाई जाएगी।)***
(14)	दि. 14.3.'06,	मंगलवार	–	होली, ब्रह्मस्वरूप प्रागजी भक्त का जन्मोत्सव
(15)	दि. 15.3.'06,	बुधवार	–	धुलेन्डी, प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. साहेब की जन्मजयंती

R.N.I. 28971/ 77

Air Mail

'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine

Despatched on 15th of alternate months

If undelivered please return to :—

Printer, Publisher, Editor :—

SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI

'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,

Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2722 9327

Printed at : **Delux Offset Printers**

308/4, Shahzadabagh, Opp. Rohtak Road, Daya Basti, Delhi

TO,